ISSN 2229-6751

RUMINATIONS

A Peer-Reviewed Bi-Annual International Journal for Analysis and Research in Humanities and Social Sciences

Abstracted & Indexed at- Ulrich, U.S.A.

Website: ruminationssociety.com

IOI WORLD of JOURNALS

COSMOS IMPACT FACTOR

Editor in Chief
Dr. Ram Sharma

Members Editorial Board
Dr. Elisabetta Marino,
(University di Roma, Italy)
Dr. Carolyn Heising,
(Iowa State University, Iowa, USA)
Dr. Andre Kukla,
(University of Totanto, Canada)
Dr. Diane M. Rousseau, USA
Dr. Alberto Testa, Argentina
Frank Joussen, Germany
Dr. M. Rajaram,
Government Arts College,
Karur, Tamil Nadu, India

ISSN 2229-6751

PRINCIPAL
Saraswati Vidya Mandir Law
College Shikarpur, BSR

डा॰ किरन बेदी की पुलिस प्रशासन में भूमिका महिलाओं के लिए प्रेरणा

डा॰ अरविन्द कुमार
राजनिति शास्त्र विभाग (H.O.D. B.A. LL.B)
सरस्वती विद्या मन्दिर लॉ कॉलिज, शिकारपुर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

पुलिस प्रशासन और भारतीय राजनीति में महिला पुलिस की भूमिका की पूर्णता के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं, कि जीवन में पुलिस जैसे कर्मचारी या अधिकारी के कठोर प्रशासनिक वातावरण में भी डा॰ किरण बेदी ने एक योग्यतम, आदर्शपूर्ण एवं मानवीय तथा संवेदनापूर्ण व्यावहारिक प्रशासनिक गतिविधियों का जो परिचय दिया है – वह नही भूला जा सकता। जो कार्य पुरूष अधिकारियों के लिए अगम्य था, उसे *किरण बेदी ने करके दिखाया– यह एक आश्चर्य नही अद्भुत चमत्कार है, और महिला शक्ति का प्रदर्शन है।*

भारत का एक ऐसा मुखर व्यक्तित्व जिसकी अपनी अलग पहचान है, वह नाम है– किरण बेदी।

पुलिस-विभाग में इतिहास रचने वाली किरण बेदी भरतीय पुलिस सेवा (I.P.S.) की पहली महिला अधिकारी हैं। पुलिस सेवा में नई मंजिलें, नई ऊँचाईयों को तलाश करता यह व्यक्तित्व अपराधी से अपराध को कोसों दूर करने और नशे की लत को छुड़ाने में, पुलिस–विभाग में आध्यात्मिक प्रशिक्षण देने में, और झोपड़ पट्टी के बच्चों को ज्ञान व शिक्षा के प्रसार में, अद्भुत योगदान देने के लिए प्रसिद्ध हैं। ऐसे व्यक्तित्व बिरले ही होते है। भटकती मानवता को पथ पर लाने का प्रयास करता हो।

डा॰ किरण बेदी ने एक सामान्य परिवार में जन्म लेकर अपने कठिन परिश्रम, अध्ययनशील शक्ति, चिंतनशक्ति और कर्तव्यपरायण प्रवृत्ति के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को आकर्षित किया है। लोक-प्रशासिका और प्रशासनिक अधिकारी के रूप में अद्भुत साहस और पराक्रम दिखाकर आने वाले प्रशासनिक अधिकारियों के लिए एक रिस्ता दिखा दिया है।

राजनीतिक उलझनों, विवादों, कार्यवाहियों के बावजूद भी किरण बेदी ने अपनी हिम्मत नहीं हारी। पारिवारिक समस्या में बच्ची की बीमारी तथा अनेकशः कठिनाइयों के बावजूद भी किसी अपने से उच्चाधिकारी के समक्ष अपने को झुकने नहीं दिया। एक पुलिस अधिकारी होने के नाते किरण बेदी ने जेल जीवन और कैदियों के अतिरिक्त जीवन के हर पहलू पर सोचने और कुछ करने का निणर्य लिया था।

उनका कहना था कि पहले अपने आप को सुधारो, फिर स्वतः लोग सुधर जायेंगे' अर्थात् किसी को बुरा देखने, सुनने और बुरा कहने से पहले अपने को टटोल लो कि हम कितने अच्छे/बुरे हैं। जीवन का आदर्श होना चाहिए, उज्जवल चरित्र का निमार्ण होना चाहिए। जीवन जीने के लिए होता है, उसे कष्ट न देकर प्रसन्न रखना है। क्योंकि जीवन एक कला है, और कला ही जीवन है।

वह पुरूष को जन्म देती है, माता बनती है, बहन है, पत्नी है और वृद्धावस्था में दादी का बड़ा पद ग्रहण करती है। जिसके अनेक रूप हैं, अपने सभी रूपो में, अपने आंचल में पुरूष को सुरक्षित छिपाये रखने का प्रयास करती है– वही पुरूष आज उसके लिए घृणा का पात्र बनकर रह गया है। बेटा, बेटा नहीं रहा, पति, पति नहीं रहा, बाप, बाप नहीं रहा, उसके लिए तो सभी एक समान ही दिखे। अतः इसे देखकर किरण बेदी संवेदनशील बन उठी।

इस प्रकार, डा॰ किरण बेदी का मूल्यांकन करना एक 'टेढ़ी खीर' के बराबर है। लगातार, जो कुछ भी लिखा जाये, किरण के लिए छोटा है, वे महिला महान पुलिस अधिकारी के रूप में एक महान चिंतक, कुशल पथप्रर्दशक, आदर्श शिक्षिका एवं भारतीय नारी है। तभी तो, महान कवि जय शंकर प्रसाद जी ने कहा था कि–

PRINCIPAL
Saraswati Vidya Mandir Law
College Shikarpur, BSR

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजन नगपगतल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो।
जीवन के सुन्दर समतल में।।

भारतीय राजनीति की प्राचीनकाल से विशेषता रही है कि "प्रजा सुखं, सुखे राज्ञः"। अर्थात् जब प्रजावर्ग सुखी है, तब राजा भी अपने को सुखी समझता था। आज इसके ठीक विपरीत स्थिति है। डा॰ किरण बेदी ने बताने का प्रयास किया है कि आज की भारतीय राजनीति में स्वार्थी विचारों की अधिकता है, न सामाजिक सुधार का चिंतन है, न राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव है, केवन छलावा मात्र है।

भारतीय राजनीति में असंतोष, चरित्रहीनता, आदर्शहीनता, स्वार्थीपन भाव, अवसरवादिता, जातिवाद, क्षेत्रीयवाद, भाषावाद, धर्मवाद, पाश्चात्य रहन-सहन, भारतीय संस्कृति से अलगाववाद जैसी कुछ विचारधाराऐं विकास की गति में बाधक बन रही है।

भारतीय जेलों की स्थिति का अध्ययन कर, उनसे सम्बन्धित समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न अधिकारियों एव कर्मचारियों की बैठकें बुलाकर प्रकाश डाला और जेल-जीवन में आवश्यक परिवर्तन लाकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया। दिल्ली के तिहाड़ जेल की बिगड़ी स्थिति में एक नया वातावरण देकर कैदियों के जीवन में उत्साह भर दिया।

किरण को हमेशा ऐसी कार्यशैली में विश्वास रहा है, जो पारदर्शी हो और जिस तक लोगों की पहुंच आसान हो, अपने कार्यालय में वह कर्मचारियों तथा आम जनता दोनों के स्तर पर सहभागी प्रबन्धन को प्रोत्साहित करती रही है। प्रचार-प्रसार माध्यम उसी आम जनता का अंग है। जेल के संदर्भ में ये माध्यम शंकालु समाज और जेल की ऊँची बंद दिवारो के बीच एक सेतु के रूप में विशिष्ट भूमिका निभा सकते है।

भारत में आज पुलिस जिस कानून के आधार पर कार्य कर रही है, उस पुलिस एक्ट का गठन सन् 1661 में आज से करीब 160 वर्ष पहले अंग्रेजी शासनकाल में हुआ था,

समाजिक गतिविधियां आज जिस वेग से बदलती जा रही हैं, उनको देखते हुए यह करीब 170 वर्ष का समय बहुत होता है। उस समय के समाज और आज के समाज में जमीन-आसमान का अन्तर आ गया है। अतः इसमें अर्थात पुलिस प्रशासनिक गतिविधियों में भी अवश्य परिवर्तन लाना होगा जो नितान्त आवश्यक है।

किरण बेदी सूर्य की रोशनी की तरह किसी परिचय की मोहताज नहीं, वह सूर्य के प्रकाश की तरह स्वयं पहचान बनाने वाली महिला पुलिस अधिकारी है, जिन्होंने अपने कार्यकाल में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान देकर कृतार्थ किया है।

व्यावसायिक योगदान के आलावा उनके द्वारा दो स्वयंसेवी संस्थओं 'नवज्योति' और 'इण्यिन विजन फाउन्डेशन' ने भारतीय नारी-जीवन और वन्य-जीवन के विकास में अथक प्रयास किया है।

भारतीय कानून-व्यवस्था व शांन्ति व्यवस्था जो मुख्यतया पुलिस के दायित्व में आती हैं, आज एक गम्भीर व चिंताजनक सवाल बन गयी है। पुलिस विभाग में इतिहास रचने वाली किरण बेदी ने पुलिस सेवा में अपना अदभुत योगदान कर उदाहरण प्रस्तुत कर पुलिस के लिए अनुकरणीय बना दिया है।

किरण बेदी ने पुलिस अधिकारी के रूप में किन-किन चुनौतियों का सामना किया, यथा भ्रष्टाचार को मिटाने, कैदी महिलाओं की समस्याओं का समाधान, अशिक्षित महिलाओं को शिक्षित बनाना, आतंकवाद के विरूद्ध प्रतिक्रिया, तिहाड़ के अपराधियों में सुधार लाने का प्रयास, नशाबंदी एवं शराब खोरी आदि पर प्रतिबंध, कैदियों एवं अपराधियों के साथ अच्छे संवेदनशील व्यवहार आदि कार्य डा॰ बेदी के जीवन के चमत्कारपूर्ण कार्य है।

डा॰ किरण बेदी भारतीय पुलिस अधिकारियों में एक ऐसी प्रथम महिला पुलिस अधिकारी हैं, जिनके

PRINCIPAL
Saraswati Vidya Mandir Law
College Shikarpur, BSR

चिंतन और कार्य में संवेदना है, ममता है, सच्ची लगन है, और है सामाजिक रूढियों को अंत करने की कल्पना शक्ति। विशेष तौर पर हमारे समाज में महिलाओं की बड़ी समस्याऐं हैं– जो आज भी चार दिवारियों के अन्दर सिसकियां भर रही है। जिनके जीवन की कोई रूप-रेखा नहीं है।

अपने प्रशासनकाल में डा. किरण बेदी ने पुलिस कार्य के साथ-साथ सामाजिक समस्याओं और विडम्बनाओं पर सोचने का प्रयास किया है। उनके चिंतन की गहराई में जीवन की सार्थकता है, प्रशासन की अनदेखी बातें हैं, और अटूट दूरदर्शिता।

किरण बेदी, एक संवेदनशील पुलिस अधिकारी है। उन्होंने खाकी वर्दी को नयी गरिमा प्रदान की है। समाज में गैर-बराबरी, अन्याय और जुल्म उन्हे कतई बर्दाश्त नहीं। 'जैसा मैंने देखा' संकलन में उन्होंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को आधार बनाकर यह प्रमाणित करने की कोशिश की है, कि कारगर और प्रभावशाली हस्तक्षेप व्यवस्था और सामाजिक कुरीतियों के शिकार और खासकर महिलाओं को उनका हक दिलवाया जा सकता है, और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने को प्रेरित किया जा सकता है। यथा महिलाओं सम्बन्धी विभिन्न घटनाओं एवं समस्याओं के प्रति डा. किरण बेदी अति संवेदनशील हैं।

1. बलात्कार, व्यभिचार
2. हत्या
3. अपहरण
4. मार-पीट
5. आग से जला देना
6. बेसहारा बना देना, आदि
7. दहेज-उत्पीड़न और घर से निकाल देना।

जबकि महिलाऐं 'मातृ-शक्ति' का प्रतीक है। उन्हें सादर के साथ रखना, उनकी परवरिश करना हमारा धर्म-कर्म दोनों बनता है। वह पुरूष की प्रेरणा, बच्चे के खेल का खिलौना है, प्रेम ही जीवन का उत्साह है, क्षमा उसकी विशालता है, दया उसकी आन्तरिक अभिलाषा है नारी शक्ति स्वरूपा है। वह आत्मा की अमर कला है जिस पर सारे संसार का व्यवहार चलता है।

सन्दर्भ सूची:

1. बेदी डा. किरण : 'यह सम्भव है'
2. बेदी डा. किरण : 'जैसा मैने देखा'
3. बेदी डा. किरण : गलती किसकी'
4. बेदी डा. किरण : 'भारतीय पुलिस'
5. प्रसाद जयशंकर : कामायनी (श्रद्धा सर्ग)
6. मरूचा, रूपवेह नारी : 'सलाखों की परछाईया'
7. एशियन एज : 10 फरवरी, 1995

●●●●

PRINCIPAL
Saraswati Vidya Mandir Law
College, Shikarpur, BSR

ISSN 2250-0561

GLIMPSES

(A Peer-Reviewed Bi-Annual Refreed International Journal of Multi Disciplinary Research)

Vol. 8 No. 2 JUNE, 2019

Website: ruminationssociety.com

I WORLD of JOURNALS

COSMOS IMPACT FACTOR

PRINCIPAL
Saraswati Vidya Mandir Law College, Shikarpur, BSR

ISSN 2250-0561

Dr. Ram Sharma

भारतीय राजनीति के पन्ने (पेज) – एक ऐतिहासिक विवेचन

डा॰ अरविन्द कुमार
(एच.ओ.डी. – बी. ए. एल एल. बी.)
सरस्वती विद्या मन्दिर लॉ कॉलिज, शिकारपुर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

मन बड़ा स्फुरणशील है। उसकी गति और क्षेत्र का हम मापन नहीं कर सकते। चिंतनशील मन भारतीय राजनीति की वर्तमान स्थिति को देखते हुए अतीत की गहराईयों की ओर आगे बढ़ा कि भारतीय राजनीति की दशा या स्वस्थ अतीत, मध्य में कैसा रहा, हम कहाँ थे, और आज कहाँ जा रहे हैं, यह एक विचारणीय प्रश्न है।

जब हम बर्बर अवस्था (जंगली) में थे, तो हमारी आवश्यकताऐं केवल पेट भरने की थी, किन्तु जैसे-जैसे मानव मस्तिष्क विकसित होने लगा, वह एक समूह में आया, प्राकृतिक वस्तुओं से सम्बन्ध बनाया, पशुओं से प्रेम किया, जल को चखा, फलों का सेवन किया, अनाजों से परिचय हुआ तो उसकी समझ में आया कि हमारे लिए कौन सी वस्तु उपयुक्त है और कौन सी नहीं।

प्रकृति ने भी मानव को धरती पर यह संदेश देते हुए कहा कि हे मानव! तुम पृथ्वी लोक में जा रहे हो, मैंने तुम्हारे जीवन के लिए सम्पूर्ण वस्तुएँ निर्मूल्य दे रहा हूँ, इनका सही उपयोग करना जिससे सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके, चुराना नहीं, नष्ट मत करना, हमारी दी हुई वस्तु पर आवश्यकतानुसार सभी प्राणियों और मानव दोनों का अधिकार है। सभी प्राणियों में तो तुम्ही श्रेष्ठ हो, और तो केवल भोग प्रधान हैं। यथा –

"सर्वेभवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
माँ काश्चिद् दुःख भागभेवद्।।"[1]

भारत में जब से ऐतिहासिक राजाओं का काल प्रारंभ होता है, उनमें नंदवंश के पश्चात् मौर्य की प्रसिद्धि होती है। चाणक्य जैसे प्रधानमंत्री का आगमन होता है और चन्द्रगुप्त मौर्य, मौर्यवंश का प्रथम सम्राट होता है। चाणक्य ने अपनी **"चाणक्यनीति"** के आधार पर चन्द्रगुप्त मौर्य को सदा अच्छी नीतियों का प्रतिपादन करते रहें और राजा के कार्य और राजनीति के चिंतन की प्रेरणा देते रहें। जैसे –

"प्रजा सुखं,
सुखे राज्ञः।"[2]

अर्थात् यदि प्रजा अपने राजा के राज्य काल में सुखी है, तो राजा भी अपने को सुखी या प्रसन्नचित्त समझता था। तत्कालीन राजा लोग चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक आदि घर-घर देश बदलकर घूम-घूम कर पूछते थे कि हे प्रजा, तुम्हें क्या दुःख है? उसका कर्म ही था, प्रजा की सेवा करना, सभी को उचित सुविधाऐं समान रूप से मिलें। आगे के सम्राटों में भी गुप्त साम्राज्य, शुंग वंश, हर्षवर्द्धन वंश के सम्राटों ने प्रजा के प्रति दया भाव का प्रचार किया, विश्व-शान्ति और विश्वमानवता के कल्याण के लिए अनेकों संगीतियों (गोष्ठियों) का आयोजन कर मानवता का संदेश देकर सभी के सर्वांगीण विकास की योजना बनाई, सभी धर्मों, मत-मतान्तरों को आश्रय दिया और सभी में एकरूपता लाने का प्रयास किया। हमारे देश की सीमाऐं जो अदान्त थी, उन्हें सम्राटों ने अपने पौरूष से शान्त एवं संगठित किया, क्योंकि उनमें राष्ट्रीय सद्भाव और मातृभूमि की रक्षा की भावना कूट

PRINCIPAL
Saraswati Vidya Mandir
College, Shikarpur, Bu

कर कर रही थी। तत्कालीन राजनीति आदर्शवादी थी। हम अपने हक के लिए लड़ भी सकते है और दूसरे के हक को छीनेंगे नहीं, ये आर्यावर्त का आदर्श था।

मध्यकालीन भारतीय राजनीति में कुछ परिवर्तन आये, हर्षवर्द्धन हिन्दू सम्राट के पश्चात् भारतीय जन-जीवन बाहरी आक्रान्ताओं के द्वारा त्रस्त हो चुका था। अरब देश की राजनीति **'भारत को सोने की चिड़िया समझकर'** बौखला उठे और अपार धन सम्पत्ति को कैसे प्राप्त कर सकें, भारतीय पश्चिमी सामुहिक एवं पर्वतीय रास्तों से आक्रान्ता के रूप में भारत पर धावा बोल दिया। उस समय भारत छोटे-छोटे स्टेट राज्यों के रूप में बिखर गया था, आपसी वैमनस्य और फूट ने उनको निमंत्रण दिया और उन्होंने हमारी संस्कृति को बराशायी कर दिया, खूब लूट-पाट, अराजकता की स्थिति आ गई। संस्कर्षति चरमरा गई। तत्कालीन देशप्रेमी राजाओं ने उनका सामना किया, किन्तु वे असफल रहे। उन लोगों ने लूटने के साथ-साथ इस्लामिक आदर्श को प्रसारित करने का प्रयास किया। यथा– मुहम्मद बिन कासिम, मु॰ गजनवी, मुहम्मद गौरी, तैमूरलंग, अलाउद्दीन खिलजी, चंगेज खाँ, मुगल बादशाहों में बाबर, हुमायूँ और औरंगजेब ने भारतीय संस्कृति को मिटाने का प्रयास किया। मन्दिरों की जगह मस्जिदें बनी। हिन्दु से मुसलमान लोगों को बनाया गया। जहाँगीर, शाहजहाँ और अकबर के काल में कुछ भारतीय संस्कृति को रास्ता मिला। अकबर ने अपनी राजपूत नीति और धार्मिक नीति के द्वारा भारतीय समाज को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। फिर भी राजस्थान के राजपूत शासक महाराणा प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की, हल्दी घाटी के मैदान में घनघोर युद्ध हुआ, अपार धन, जन की हानि हुई और हल्दी घाटी का मैदान तथा बनास नदी का पानी लाल रंग से रंग गया। राणा प्रताप को जंगलों की खाक छाननी पड़ी, किन्तु महाराणा ने मुगलों की अधीनता कभी स्वीकार नहीं की। उनमें देश के प्रति अनुराग था, मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम था और भारतीयता का आदर्श। कहने का तात्पर्य यह है कि मध्यकालीन भारत में तोड़-फोड़, विध्वंश, धर्म-परिवर्तन ही शासकों का उद्देश्य बन गया था।

मुगल शासकों के शासन काल में ही अंग्रेज, व्यापारियों का, डच, फ्रेंच, पुर्तगालियों, ईसाई, फारसी आदि का बोलबाला होने लगा था। बहादुरशाह जफर के बाद भारतीय राजनीति ने करवट बदली, अंग्रेजों का क्रमशः सम्पूर्ण भारत पर आधिपत्य हो चला था, जिसका विरोध महारानी लक्ष्मीबाई, चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, बिस्मिल, वीर सावरकर, सुभाष चन्द्र बोस, अरविन्द्र घोष, मौलाना आजाद, डा॰ इकबाल, रानी दुर्गावती आदि ने किया, फिर भी असफल रहे, भारतीय नीति और अंग्रेजों की फूट डालो और शासन करो, की नीति के चलते इनमें से कुछ को अपने प्राण गवाँने पड़े। अंग्रेजों ने दो सौ वर्षों तक हमारे ऊपर सफलतापूर्वक शासन किया और धन को लूटा, यहाँ के कच्चे माल को लंदन के कारखाने में औद्योगिक दृष्टि से भेजा। अंग्रेजो की क्रूर नीति और जलियाँवाला बाग के काण्ड ने भारत को अस्त कर दिया। तत्कालीन राजनेताओं ने आगे बढ़कर पुनः कदम बढ़ाया, जिनमें लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र, पाल, (लाल, बाल, पाल) दादाभाई नौरोजी, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द (ऊपर वालों के पहले) आदि सभी ने भारतीयता के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाई। कितनों ने मारा, कितने मारे गये और अन्त में गांधी जी के संकेतों पर 'करो या मरो' की राजनीति लाकर अंग्रेजों को इस देश से भगाने का सफल प्रयास किया गया और हम 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र होकर स्वतंत्र स्वांस लेने ही वाले थे कि भारतीय मु॰ जिना ने अपना राजनीतिक दाव खेला और तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड कर्जन के सहयोग से भारत को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो भागों मे बँटवारा हो गया, गांधी जी की 1948 में हत्या की गई और भारत चारों तरफ से छिन्न-भिन्न हो गया। देश जर्जर की स्थिति में हो गया था, कमर टूट चुकी थी, अंग्रेज लुटेरों ने देश को खोखला कर दिया था। डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर ने भारत का संविधान निर्मित किया, प्रथम प्रधानमन्त्री के रूप में पं॰ जवाहर लाल नेहरू ने देश के सर्वांगीण विकास के लिए प्रथम पंचवर्षीय योजना का निर्माण किया। इन पंचवर्षीय योजनाओं की कार्यप्रणाली 8-9वीं योजना तक क्रमशः अच्छे रूप में चली, विकास के चरण सामने आये, प्रजातंत्रात्मक प्रणाली का विकास हुआ, आर्थिक प्रगति हुई। कृषि में सुधार हुआ, छोटे-बड़े उद्योगों का विकास हुआ और हम विकासशील देशों की पंक्ति में खड़े हो गये। आज सोलहवीं पंचवर्षीय योजना का प्रचलन है किन्तु विकास की प्रगति क्या है,

PRINCIPAL
Saraswati Vidya Mandir Law
College, Shikarpur, BSR

किसी से छिपा नहीं है, विकास के नाम पर –

1. रिश्वतखोरी,
2. चोर-बाजारी,
3. घरेलू राजनीति,
4. खानदानी राजनीति,
5. स्वार्थी राजनीति,
6. अवसरवादिता की राजनीति,
7. शिक्षा में चरित्र का नाम नहीं,
8. वैश्वीकरण की राजनीति,
9. शिक्षा का व्यवसायिक स्वरूप, गुणात्मक विकास नहीं,
10. पाश्चात्य संस्कृति की ओर झुकाव,
11. क्षेत्रीयतावाद,
12. जातिवाद,
13. भाषावाद,
14. हत्या की राजनीति,
15. राजनीतिक पार्टियों में कोई संगठनात्मक शक्ति नहीं,
16. चुनावों की राजनीति,
17. अनैतिक राजनीति,
18. बदले की भावना की राजनीति,
19. राष्ट्रीय विखण्डन की राजनीति,
20. प्रान्तीय विखण्डन की राजनीति,
21. राष्ट्रहित में चिंतन की शक्ति का ह्रास,
22. अमानवीयता की राजनीति,
23. मानवाधिकार की राजनीति,
24. असंतुलन की राजनीति,
25. आंतरिक द्वन्द की राजनीति आदि।

भावनाओं का विकास होता जा रहा है। प्रजा और राजा के बीच कोई ताल-मेल नहीं, और अन्त में यही कहा जा सकता है कि वोटों की खरीद-फरोख्त नाम की राजनीति का आये दिन विकास होता जा रहा है। अतः वर्तमान भारतीय राजनीति को हम संक्रमण की राजनीति कह सकते हैं। प्रत्येक वर्ग का आदमी एक दूसरे को शंका की निगाह से देख रहा है। आज का आदमी एक दूसरे को खा जाने की भी राजनीति कर रहा है। संकीर्ण विचारों की राजनीति अपना घेरा डाले हुए है।

प्रश्न यह है कि हमारे देश के कर्णधारों ने स्वतंत्रता के पश्चात् इसी प्रकार की घिनौनी राजनीति की कल्पना की थी? नहीं बल्कि उन्होंने एक आदर्शपूर्ण राजनीतिक जीवन एवं राजनीतिक पर्यावरण की कल्पना को जन्म दिया था, जिसमें आम आदमी की शांति थी, राष्ट्र निर्माण की योजनाएँ थी, मानवता का संदेश था, विश्व में पंचशील की स्थापना की गई थी, जो भारतीय पं. जवाहर लाल नेहरू की देन है। राष्ट्रीय अखण्डता की भावना थी, लोगों ने बिखरे भारत को एक करके विकास का मार्ग अपनाया था।

भारतीय आदर्शों में था राजनीति का अर्थ राजा के राज्य और उसके राज्य करने की नीति (व्यवहारों) से था, जैसा पूर्व में कहा गया है कि – **"प्रजा सुखं, सुखे राज्ञः"** किन्तु आज की घृणित राजनीति ने अपने संकीर्ण विचारों का विस्तार करके –

PRINCIPAL
Saraswati Vidya Mandir Law
College, Shikarpur, BSR

1. अलगाववाद,
2. वैमनस्यता,
3. पैत्रिक राजनीति,
4. खरीद-फरोख्त की राजनीति,
5. गुण्डों की राजनीति,
6. लुटेरों की राजनीति आदि।

भावनाओं ने आज भारत की अखण्डता को खतरे में डाल दिया है। ऐसा भारतीय आन्तरिक और बाह्य अशांति को देखकर विदेशी महाशक्तियों की निगाहें हमारी सीमाओं पर निगाह लगाये बैठी हैं, वे कब आक्रामक रूप धारण कर भारत पर आक्रमण कर देंगी, इसकी चिन्ता वर्तमान भारतीय राजनीतिज्ञों को नहीं है।

कभी प्रजातंत्र की परिभाषा अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने इस प्रकार की थी कि–

"Democracy is the government of the people, by the people and for the people." अर्थात् 'प्रजातंत्र जनता की, जनता द्वारा चुनी गई जनता के लिए सरकार है।' किन्तु पुनः देश की स्थिति और प्रजातंत्र की हालत को देखते हुए उसने कहा कि–"Democracy is the government of the fools, by the fools and for the fools." अर्थात "प्रजातंत्र मूर्खों की, मूर्खों द्वारा चुनी हुई मूर्खो. के लिए सरकार है।"

वर्तमान में भारतीय राजनीति के स्वरूप को देखते हुए यही कहा जा सकता है कि अब्राहम लिंकन की दूसरी परिभाषा भारतीय राजनीति पर पूर्णतः लागू है। इसका अन्तिम स्वरूप आगे क्या दिखाई देगा यह महान चिंतन का एक विषय है।

सन्दर्भ

1. उपनिषदिक वाणी
2. चाणक्यनीति, पृ. 50

●●●●

PRINCIPAL
Saraswati Vidya Mandir Law College, Shikarpur, BSR